ستمبر ۲۰۱۵ء

ماہنامہ **شعاع عمل** لکھنؤ

قَالَ اللّٰهُ تَبَارَکَ وَتَعَالیٰ قَدْ جَاءَ کُمْ مِنَ اللّٰهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُبِينٌ

بے شک تمہارے پاس اللہ کی طرف سے نور آیا ہے اور روشن کتاب

یا علی ابن موسیٰ الرضا



نورہدایت فاؤنڈیشن، حسینیہ غفرانمآبؒ، چوک، لکھنؤ-۳

R.N.I NO. UPBIL/2004/13526
Postal Regd. No. SSP/LW/NP-75/2014-16 Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month.

Annual Rs. 200/- Per copy-Rs. 20/-

SHUA-E-AMAL
Lucknow

शुआ-ए-अमल

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ

September 2015



Maqbara Saadat Ali Khan lucknow.



NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION

Imambara Ghufran Maab, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDIA, Ph.:0522-2252230

Per Copy 20/-
Annual 200/-

बिस्मेही तआला

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन की

इस्लामी, ज्ञान व शोध

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

सितम्बर 2015 ई०

शुआ-ए-अमल

"लखनऊ"

वर्ष 12 — अंक 3

न्यास संस्थापन

15 जमादिलऊला 1424 हि० / 16 जुलाई 2003 ई०

पत्रिका विमोचन

15 जमादिलऊला 1425 हि० / जुलाई 2004 ई०

मिलने का पता

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

इमामबाड़ा हज़रत ग़ुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक, लखनऊ - 3

Phone No: 0522-2252230   Mobile No: 08736009814 — 09335996808

प्रकाशक मुद्रक: सैय्यद मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी द्वारा स्वामी एस कलबे जवाद नक़वी के लिए निज़ामी प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट अपोज़िट हसनैन मार्केट, चौक, लखनऊ (उ० प्र०) से मुद्रित तथा नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन, इमामबाड़ा ग़ुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक लखनऊ (उ० प्र०) से प्रकाशित।
सम्पादक: सैय्यद मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी

विषय सूची

सितम्बर 2015ई०

ज़ीक़ादा 1436 हि०

R.N.I. No.
UPBIL/2004/13526

▼▼▼

Postal Regd. No.
SSP/LW/NP-75/2008-10

●●●

WEBSITE:
www.noorehidayatfoundation.org
www.naqeeblucknow.com

E_mail:
noorehidayat@yahoo.com
noorehidayat@gmail.com

वार्षिक अंशदान

1- एक साल के लिए 200/-
2- पांच साल के लिए 800/-
3- लाईफ़ मिम्बरशिप 4000/-

वहाबी मत का सत्य

y$kd %आयतुल्लाहिल उज़मा सय्यदुल उलमा मौलाना सै0 अली नक़ी नक़वी

I Eiknu %नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

vk[kjh ¼fd Lr½

हज़रत का यह भी सुकथन हैः

“शैतान निराश हो चुका है कि अरब द्वीप में उसकी इबादत/भक्ति नहीं होगी।”

जिससे मक्के और मदीने का तात्पर्य हो निश्चय ही है बल्कि इब्ने असीर ने निहाया में इमाम मालिक का कथन लिखा है कि यहाँ अरब प्रायः द्वीप से खुद मदीना मुराद (अभिप्राय) है। तो अब इसके बाद यह बात कितनी अजीब व हास्यास्पद है कि जिस ज़मीन को पैग़म्बर ने शैतान का केन्द्र कहा हो वहाँ के लोग यह कहें कि केवल हम ही सच्चे मुसलमान व मोमिन हैं और जिन शहरों के लिए कहा हो कि वे ईमान का केन्द्र हैं और वहाँ शैतान निराश हो चुका है, उन्हें समझा जाए कि वे सब काफ़िर व मुशरिक हैं।

आश्चर्यजनक बात बनाने का कर्तब है कि नज्दी लोग कुरआन की आयतों और कुछ हदीसों के उन अर्थों से जो ठीक और बुद्धि–संगत कारणों पर आधारित है उन्हें कड़ाई से नकारते हैं। और वे इसपर अड़े रहते हैं कि शब्दों को उनके सामने के अर्थों पर ले जाना चाहिए लेकिन जब ये हदीसें प्रस्तुत की जाती हैं तो दुरस्व अभिप्राय से काम ले कर धाँधली करके यह बताते हैं कि इन हदीसों का इशारा नज्द की ओर नहीं बल्कि इराक़ की ओर है, इसलिए कि वह हिज़ाज़ से ज़रा ऊँचाई पर है। लेकिन भाषा, भूगोल (जियोग्राफ़ी) और अरबी काव्य सबको देखने से यह बात सच्चाई कोसों दूर लगती है। और यह भी पता चलता है ‘नज्द’ का शब्द अगर बिना किसी क़ैद (शर्त/बन्धन) के बोला जाए तो उसका अर्थ यही ज़मीन होता है जो हिजाज़ के पास उससे ऊँची है, इसलिए नज्द कहलाती है। और इसके उलट तिहामा है इसलिए कि वह उससे नीची है और उसे “ग़ौर” (गहराई) भी कहते हैं जो ‘नज्द’ (उभार) का विलोम होता है।

फिरोज़ाबादी की ‘क़ामूस’ में नज्द का अर्थ और उसकी सीमाएं लिखी हैं कि उसके आगे ‘तिहामा’ और ‘यमन’ है और उसके इधर उधर इराक़ और शाम है, और हिजाज़ की ओर से ‘ज़ातेअरक़’ से शुरू हो जाता है। और जौहरी ने ‘सिहाह’ में लिखा है कि नज्द अरब के शहरों में से है और वह ग़ौर के सामने है और ग़ौर का अर्थ तिहामा होता है और तिहामा से इराक़ तक बीच में जितना ऊँचा हिस्सा है, वह नज्द है। और क़य्यूमी ने नज्द के बारे में लिखा है कि नज्द मशहूर मुल्क है अरब की ज़मीन में इराक़ से मिला हुआ ओर वह हिजाज़ का भाग नहीं है, मगर अरब प्रायद्वीप में शामिल है। ‘तहज़ीब’ में है कि जो खाई किसरा (इरान का एक राज घराना) शासकी ने इराक़ की सीमा पर खुदवायी थी उस खाई के आगे जितना भाग है वह नज्द है, जहाँ तक हर्रा का मोड़ है। जब उस ओर मुड़ जाओ तो हिजाज़ में दाख़िल हो गये। महमूद शुकरी आलूसी ने ‘तारीख़ नज्द’ में नज्द की सीमांकन से लगभग 10 कथन लिखे हैं जो सबके सब यह बताते हैं इराक़ की धरती नज्द से बाहर है।

अरब के शायरों ने भी नज्द के शब्द से इसी ज़मीन को मुराद लिया है न कि इराक़ की ज़मीन को, बल्कि इराक़ का नाम नज्द के मुक़ाबले में लिया है। वह शेर हमने अपनी अरबी किताब में दर्ज किए हैं, इस उर्दू किताब में उनको लिखने से कोई फ़ायदा नहीं है।

क़ामूसुल अमकिनावल में है कि नज्द के

शहर हिजाज़ के पूरब में स्थित हैं और इनके दो भाग हैंः नज्दे हिजाज़ और नज्दे आरिज़। और इस ज़मीन से क़रामिता उठे और मुसैलिमा (झूठा नबी) वहीं से उठा और वहाबी लोग वहीं से निकले और उनकी राजधानी 'रियाज़' नामक शहर है जिसकी जनसंख्या तीस हजार है। इससे स्पष्ट है कि नज्द की ज़मीन वही है जो वहाबियों का केन्द्र है और यह हिजाज़ के पूरब में है जिसके बाद उन हदीसों के अर्थ में कोई परदा नहीं रहता। उन हदीसों में से एक हदीस और है जिसे "अहमद बिन ज़ैन दिअलान" ने "खुलासतुल कलाम" में दर्ज किया है किः "हज़रत पैग़म्बर ने फरमाया नज्द से एक शैतान निकलेगा जिसके फितने से अरब में तहलका पड़ जाएगा।"

एक और हदीस उन्होंने दर्ज की है किः पूरब की ओर से निकलेगे ऐसे लोग जो कुरान ऐसे पढ़ेंगे कि वो उनके गले से आगे नहीं बढ़ेगा। वो दीन से ऐसे निकल जाएंगे जैसे तीर कमान से निकलता है। उनकी ख़ास निषानी सर का मुंडाये हुए होना है।

और इसी विषय की और भी रिवायतें हैं।

खुलासतुल कलाम में इन सब रिवायतों को लिखने के बाद लिखा है कि यह जो हज़रत[स०] ने फ़रमाया कि इनकी निशानी सर का घुटवाना है यह स्पष्ट तौर पर उस गुट को ज़ाहिर कर रहा है जो पूरब से निकला और वह मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब का अनुकरण करती है। और इब्ने अब्दुल वहाब का इस पर बल था कि सिर को इस तरह घुटवाओ कि ज़रा भी बाल का निशान न रह जाए। और कोई आ जाता तो उसे उठ कर जाने नहीं दिया जाता था जब तक कि उसका सर मुण्ड न जाय। इतनी प्रतिबद्धता इस गुट से पहले किसी में भी देखि नहीं गयी। अब्दुर्रहमान मुफ़्ती ज़ुबैद का कहना था कि इब्ने अब्दुलवहाब की काट में किसी किताब के लिखने की ज़रूरत नहीं बस हज़रत[स०] की यह हदीस काफ़ी है कि अस गुट की निशानी सर का मुंडवाना है इसलिए कि किसी बिदअती गुट ने भी कभी इस पर इतना वल नहीं दिया और मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब की ओर से एसा बन्धन थी कि वह औरतें तो इसकी मतावलम्बी हों उन्हें भी सर मुंडवाने का निर्देश था।

उन हदीसों में एक हमारे उच्च कोटि के मुहदिदस अल्लामा मजलिसी ने 'बिहारूल अनवार' की एक जिल्द में अबू सईद ख़ुदरी की एक रिवायत लिखी है किः

"हज़रत अली[अ०] ने यमन से रसूलल्लाह के पास बहुत सा क़ीमती सामान भेजा तो हज़रत ने उसे चार आदमियों में बाँट दिया अक़रा बिन हाबिस ऐनीया बिन बद्र फ़ज़ाज़ी, अलक़मा बिन इलाक़ा आमिरी और ज़ैद बिन खैल ताई तो क़ुरैश और अन्सार (मदीने वाले सहाबी) को इसपर गुस्सा आया और वे कहने लगे कि ये नज्द के बड़े बड़े लोगों को देते हैं ओर हमें छोड़ देते हैं। आपने कहा कि मैं तो उनका दिल जीतने के लिए देता हूँ। उसके बाद एक आदमी आया जिसकी आँखें धंसी हुई थीं और माथे के दोनों ओर की हड्डियाँ ऊँची थीं, दाढ़ी घनी थी और गाल फूले हुए थे और सर मुंडा हुआ था। उसने नबी[स०] का नाम लेकर पुकारा और कहा कि अल्लाह से डरिए। आपने फ़रमाया मैं अल्लाह की अवज्ञा करूँगा तो उसकी आज्ञा पालन करने वाला कौन होगा? वह मुझ पर सारे लोगों के बारे में भरोसा किए हुए है और तुम मुझ पर भरोसा नहीं करते। मुसलमानों में से एक ने जो मेरे ख़याल में खालिद बिन वलीद थे, नबी[स०] से उसे क़त्ल (वद्ध) करने की आज्ञा मांगी तो आपने आज्ञा नहीं दी और जब वह चला गया तो आपने कहा कि उसकी असल नस्ल (संन्तान) से एक गिरोह वह होगा जिसके लोग कुरान पढ़ेंगे मगर वह उनके गले से नीचे नहीं उतरेगा। वे लोग इस्लाम से यूँ निकल जाएंगे जैसे तीर कमान से निकल जाता है। वे लोग मुसलमानों को क़त्ल करेंगे और मूर्तिपूजा करने वालों को छोड़े रहेंगे। मैं अगर उनको पाऊँ तो क़त्ल करूँ इस प्रकार जैसे 'आद' कुल के किसी आदमी को क़त्ल होना चाहिए।"

दूसरी रिवायत में यह है कि किसी ने पूछा कि उनकी निशानी क्या है? तो आपने कहाः "उनकी निशानी सिर का मुंडवाना है। उसके लिए 'तहलीक़' का शब्द कहा या 'तस्मीद' का तो जब उन्हें देखना मौत की नींद का मज़ा चखाना।"

निहाया में इस हदीस के कुछ टुक्ड़ों के शब्दों के विश्लेषण में लिखा है किः

ज़ाज़ई के तायने असल नस्ल अर्थात मूल पीढ़ी (बाद की) सन्तति–क्रम सन्तान–क्रम और तस्मीद उनमें आम होगी। तस्मीद का अर्थ सर मुंडाना इस तरह कि बाल बिल्कुल न रहें। दूसरी रिवायत में है कि यह व्यक्ति ज़ुल खुवैसरा तमीमी था।

इस हदीस से दो बातें साबित होती हैं। एक यह कि नज्द वाले इस्लाम के ऐसे विरोधी थे कि उनमें से अगर कोई मुसलमान हो तो उसी प्रकार माल लेकर दिल जीतना पड़ता था जैसे मक्का विजय के बाद अबूसुफयान का और ये लोग "मुअल्लिफ़तुल कुलूब" (जिनके दिल जीत गये) कहलाते थे।

दूसरी बात यह कि जो आपने फ़रमाया कि इस (अबुल खुवैसरा तमीमी) की नस्ल से ऐसे लोग होंगे और इब्ने अब्दुल वहाब का तमीमी होना हमें पहले मालूम हो चुका है। इस लिए यह साबित हुआ कि सब निशानियाँ इस गिरोह में वही हैं जिनका रसूल ने पता दिया था। मुसलमानों का ख़ून बहाना, मूर्तिपूजा करने वालों के ख़िलाफ़ कभी तलवार न उठाना, सिरों का मुंडाना, यह सब बातें देखने में आने वाली हैं। इन्हीं से उन बातों को भी समझा जा सकता है जो आँखों से दिखाई नहीं देती जैसे क़ुरआन का गले से नीचे न उतरना, और इस्लाम से इस प्रकार निकल जाना जैसे तीर कमान से निकलता है। एसी ही और हदीसें ढूंढने से मिल सकती हैं जो नज़्दी लोगों पर खरी उतरती है (उनपर फिट हो जाती है) उन्हें पैग़म्बर का एक मोजिज़ा (भविष्यवाणी, चमत्कार) भी समझना चाहिए।

lkrokjv/;k;

vkjEHk lsvktrd ogkfc;ksadsdjrw

मालूम होना चाहिए कि यह लोग 1160 हिजरी में प्रकट हुए और जबसे सामने आए तब से मुसलमानों का ख़ून बहाते रहे। उनके उस समय के शासक/हाकिम मुहम्मद बिन मसऊद ने मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब से बैयत इसी पर की थी कि वह उस मसलक (मत) के विरोधियों से युद्ध करेगा और जिहाद के नाम पर उनका ख़ून बहाएगा। तो अब ऐसे गिरोह का पूछना ही क्या कि जिसकी नींव ही मुसलमानों के ख़ून बहाने पर रखी गई हो तो जितनी जितनी राज सत्ता पक्की होती गयी खून बहाने में बढ़ोत्तरी होती गयी। ख़ून बहाने के अतिरिक्त न जाने कितनी औरतों की बेइज़्ज़ती हुई, कितनी औरतों को क़ैद करके उन्हें कनीज़ (दासी) बनाया गया। यह सब अत्याचार मुसलमानों पर हुए और अपने राज के पूरे काल होने गैर मुस्लिम में से किसी का खून गहाया।

जब नज्द के जाहिलों में उनका सिक्का बैठ गया तो उनके अन्याय और अत्याचार का क़दम आगे बढ़ा और सऊद बिन अब्दुल अज़ीज़ के दौर में कई बार ईराक़ पर आक्रमण किया। इसी से बड़े रूतबे के शिया आलिम सैयद मुहम्मद जवाद आमिली ने अपनी किताब 'मिफ़्ताहुल करामा' में कई भागों में उन अत्याचारों का आँखों देखा हाल बयान किया है। उसी समय में ये लोग हरमैन शरीफ़ैन (मक्का, मदीना) में दाखिल हुए और शरीफ़े मक्का (मक्का के महापौर) और उनमें 1205 हिजरी से लेकर 1220 हिजरी तक लगातार लड़ाई हुई जिसमें मक्के वालों की पराजय हुई और उन्होंने हरमैन शरीफ़ैन को दारूल हर्ब (लड़ाई की भूमि) कह कर वहाँ लूटमार और हत्या का बाज़ार गर्म कर दिया। नबी के हुजरे (कोठरी) में जितना माल व रत्न थे उन सबको लूट कर अपनी मन मौजी की। इन सब घटनाओं का विस्तृत विवरण 'अजाएबुल अस्र' नामक किताब में है। हालांकि इस किताब के लेखक का स्वयं

भी वहाबी मत की ओर झुकाव था। मुसलमानों को हज करने से रोक दिया गया हज के मौसम में एलान किया गया कि ए ईमान वालो मुश्रिक नजिस हैं तो वे इस साल के बाद मस्जिदे हराम के पास न आयें। इसका नतीजा हुआ कि 1221 हिजरी से शाम (सीरिया) व मिस्र से हाजियों का आना बन्द हो गया। इसे 'खुलासतुल कलाम' द्वारा अहमद बिन दहलान में बयान किया गया है।

और इसके बाद 1223 हिजरी में उस समय के इब्ने सऊद ने मक्के वालों से कहा कि जितने कुब्बे (गुम्बद) हैं वह सब गिरा दिए जाएं ओर इन 'बुतों' को नष्ट किया जाए ताकि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न हो। दूसरे ही दिन लोग फावड़े लेकर मुक़द्दस (पुण्य/पुनीत) स्थानों और गुम्बदों को गिराने के लिए रवाना हो गए। सबसे पहले जन्नतुल मुअल्ला के गुम्बद गिराए गए जो बड़ी संख्या में थे। फिर पैग़म्बर के पैदा होने के स्थान, अबूबक्र के पैदा होने के स्थान पर जनाबे ख़दीजा के मज़ार के कुब्बे गिराए गए। और उन सभी स्थानों को मिट्टी में मिलाया जो मुसलमानों में बहुत ही आदर और श्रद्धा की निगाह से देखे जाते थे। और गिराते समय यह लोग रजज़ (लड़ाई में स्वयं की तारीफ़) पढ़ रहे थे और ढोल बजा रहे थे और उस क़ब्र वाले को गालियां दे रहे थे और कह रहे थे कि यह सब वह 'बुत' हैं जो लोगों ने पूजने के लिए बनाये हैं। इन सब बातों का ज़िक्र 'खुलासतुल कलाम' नामक इतिहास की किताब (लेखकः बिन दहलान) में किया गया है।

इसी प्रकार मदीने की क़ब्रों को ढहाया गया। सिवाए नबी की क़ब्र के गुम्बद के बाक़ी सब क़ब्रों पाक स्थानों को विषेशकर 'जन्नतुल बक़ीअ' की मज़ारों को ध्वस्त कर दिया गया। उनकी यह हरकतें बराबर जारी रहीं यहाँ तक कि मिस्र की फ़ौजें आयीं और उन्होंने उनको यहाँ से निकलने पर मजबूर किया। इसके लिए बड़ी कड़ी लड़ाई हुई और नज्द की फ़ौज की पराजय हुई। 1234 हिजरी के शाबान महीने में मुहम्मद अली पाशा मिस्र के हाकिम का हुक्म नज्द में मिस्र की सेना के कमाण्डर इब्राहीम पाशा के पास पहुँचा जो 'दरईया' तक पहुँच चुके थे। वह हुक्म यह था कि वो 'दरईया' को नष्ट कर दें, इस हुक्म के बाद मिस्र की सेना ने तेज़ी के साथ इस शहर को मलियामेट कर दिया और आग लगा दी और वहाँ के निवासी सब इधर–उधर बिखर गये। मगर हज़रत अली अलैहिस्सलाम ने ख़ारिजियों के लिए पहले ही यह ख़बर दी थी कि ये लोग बिल्कुल समाप्त नहीं होंगे जब उनकी एक शाखा कटेगी तो दूसरी स्वतः ही निकल आएगी। इसलिए कुछ समय बीतने पर इन लोगों ने फिर सिर उठाया।

ये लोग फिर इराक़ आए और करबला–ए–मुअल्ला में हज़ारों मोमिनों का ख़ून बहाया और हरम (क़ब्र का पूनील स्थल) का अनादर किया बिल्कुल उसी तरह जैसे यज़ीदी सेना नायक मुस्लिम बिन अक़बा ने मदीने का हाल किया था कि वहाँ पर नजासतों का ठेर लगा दिया गया था। इसके अलावा पाक ज़रीह को भी उखाड़ डाला और जो कुछ हरम का ख़ज़ाना था उसे लूट लिया। बस ये लोग नजफ़ में पैर नहीं रख सके और कुदरत की ओर से उन्हें पराजय हुई और बहुत सी जानें गंवा कर वे लोग निराश वापस हुए।

इसके बाद लगभग एक सदी तक ये लोग अधिक सिर नहीं उठा सके बस अपने नज्द के शहरों में ही सीमित रहे। यहाँ तक कि अंग्रेजों के कारण उन्हें आगे बढ़ने का ऐसा मौक़ा मिला कि नज्द का शासक हरमैन (मक्का, मदीना) का भी राजा हो गया। इस बार इन्होंने ऐसे जुल्म व सितम किए और अल्लाह की निशानियों की ऐसी बेइज़्ज़ती की जिससे मुसलमानों के दिलों में घाव पड़ गऐ। उस समय के अब्दुल अज़ीज़ आले सऊद ने सत्ता में आने के बाद पहले तो ताएफ़ में क़त्ले आम (नरसंहार) किया और उसके बाद "इमामुल मुफ़स्सिरीन" (कुरान के सबसे बड़े व्याख्या कार) अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास के गुम्बद को ध्वस्त किया फिर मक्के में जितने मज़ार व गुम्बद थे

उन सबको ध्वस्त किया जिनमें नबी के दादा हज़रत अब्दुल मुत्तलिब का रौज़ा था, और आपके चचा जनाबे अबूतालिब और आपकी धर्म पत्नी जनाबे ख़दीजा और आपकी माँ जनाबे आमिना बिन्ते (सुपुत्री) वहब के रौज़े भी थे, उन सबको गिरा दिया। इन महापुरूषों के अपने रूतबों और श्रेष्ठता के अलावा इस प्रकार भी देखा जाये कि इन में से ज्यादा तर लोग कुरैश कुल में बड़े महान और उत्कृष्ट महापुरूष थे जिन के बारे में खुद नज्दियों के अगुवा पूज्य धर्मगुरू और धर्मनेता इमाम अहमद बिन हंबल के मुस्नद (हदीसों के संकलन) में हदीस है कि :

''हज़रत रसूले खूदा[स०] ने फरमाया कि जिसने कुरैश की मानहानि की उसकी खुदा मान हानि करेगा।''

इसमें कोई शक नहीं कि क़ब्र का गिराना उस क़ब्र में सोने वाले का अनादर और मानहानि है। हज़रते पैग़म्बर ने एक व्यक्ति को देखा कि वह एक क़ब्र से टेक लगाये बैठा है तो आपने फ़रमाया कि क़ब्र वाले को ठेस न पहुँचाओ। बिन अबी शैबा ने अबदुल्लाह बिन मसऊद की बात बतायी कि उन्होंने कहा कि मोमिन को उसके मरने के बाद ठेस पहुँचाना ऐसा है जैसे उसके जीते जी ठेस पहुँचाना और हमें उन्होंने मोमिन को पीड़ा देने से मना किया है। हर व्यक्ति यह अन्दाज़ा कर सकता है कि यदि किसी का घर गिरा दिया जाए तो ज़िन्दगी में उसे पीड़ा होगी या नहीं? तो इसी प्रकार से अगर क़ब्र पर फावड़े चलाए जाएं तो बेशक उस मय्यत (शव) को पीड़ा होगी जिसकी वह क़ब्र है। जब यह क़ब्र वालों को पीड़ा पहुँचाना है तो अब कुरआन की यह आयत पढ़िएः "जो लोग मोमिन मर्द और मोमिन औरतें को बिना किसी जुर्म के पीड़ा दें तो उन्होंने बड़े गुनाह का बोझ उठाया।"

तायफ़ और महान मक्के में उनके ये करतूत संसार के मुसलमानों में बेचैनी पैदा करने के लिए काफ़ी ही थे कि फिर मदीनए मुनव्वरा (उज्जवल मदीना) के सभी स्मारक आसार व मज़ारों को ध्वस्त किया और जन्नतुल बक़ीअ में सारे गुम्बदों को नष्ट किया जिनमें रसूल की धर्म पत्नियों, रसूल के रिश्तेदारों, और रसूल के सहाबियों की क़ब्रें थीं जैसे उस्मान बिन मज़ऊन जिन्हें नबी ने स्वयं अपने हाथों से दफ़्न किया था और उनकी क़ब्रों को उजागर करने में विशेष प्रयत्न किया था। इसके अलावा वहाँ रसूल के पिता श्री हज़रत अब्दुल्लाह, और आप के बेटे जनाबे इब्राहीम, और आपके चचा अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब और चचा के बेटे जनाबे अक़ील और सहाबी अब्दुल्लाह बिन मसऊद और अब्दुर्रहमान बिन औफ़ और सबसे बढ़कर खातूने जन्नत (स्वर्ग की परदे वाली महिला) जनाबे फ़ातिमा ज़हरा सलामुल्लाह अलैहा का मुबारक पवित्र मज़ार था जहाँ बहुत से सुन्नी उलमा जैसे मोमिन बिन शिबलिन्जी 'नूरूल अबसार' में, मुहम्मद बिन सुब्बान 'इसआफ़ुल राग़ेबीन' में, अबुल अब्बास अहमद बिन यूसुफ़ दमिश्क़ी 'अखबारूददवल' और ' आसारूददवल' में और अली बिन बुरहानुददीन शाफ़ई 'इनसानुल उयून' में इब्ने अब्दुल बर्र 'किताबुल इस्तीआब' में और दूसरे लेखक हज़रत सैयदा[स०] की क़ब्र होने को मानते हैं। जिनके बारे में नबी की हदीस 'सहीह बुखारी' में मौजूद है किः "जिसने इनको तकलीफ़ दी उसने मुझे तकलीफ़ दी।" और यह हदीस पहले आ चुकी है कि जो मरने के बाद (मूर्दे को) पीड़ा दे वह एसा ही है जैसा जीते जी पीड़ा दी।

तो इसके बाद कुरान की यह आयत पढ़ना चाहिए जिसका आशय यह है किः "जो लोग अल्लाह और उसके रसूल को तकलीफ़ पहुँचाते है, उन पर अल्लाह की लानत (फिटकार) है दुनिया और आख़िरत में और उनके लिए बहुत बड़ा अज़ाब है।"

इन सबके अतिरिक्त उस गुम्बद को ध्वस्त किया जिसमें अहलेबैत के इमामों में से चार हस्तियाँः

1. इमामे हसन अलैहिस्सलाम
2. इमामे ज़ैनुल आबिदीन, अलैहिस्सलाम
3. इमामे मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम
4. इमामे जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम

ये सब दफ़्न थे जिनके फ़ज़ाएल (उत्कृष्टताएँ) अहले सुन्नत की किताबों में भी लिखी हैं। सारे मुसलमान उन का खास आदर और पुण्य करते थे। अल्लामा इब्ने हजर मक्की इमाम जाफ़रे सादिक़ के हाल में लिखते हैं किः "आप भी उस कुब्बे में दफ़्न हुए तो क्या कहना उस कुब्बे का कितना उच्च तरीन मुबारक और शरीफ़ (शुभ और श्रेष्ट) स्थान है यह।" हदीस के जानकार मुहम्मद पारसा बुखारी ने 'फस्लुल खिताब' में इमाम ज़ैनुल आबिदीन के हाल में लिखा है कि आप उस कलस के नीचे दफ़न हुए जिसमें इससे पहले रसूल के चचा अब्बास और ख़ुद आपके चचा इमाम हसन दफ़्न हो चुके थे और आपके बाद इसमें आपके बेटे मुहम्मदे बाकिर[अ०] और फिर उनके बेटे जाफ़रे सादिक़[अ०] दफ़्न है तो क्या कहना उस कुब्बे का कि कितना महान और श्रेय वाला यह कुब्बा है। ऐसे ही और उलमा के कथन हैं। उस कुब्बे के ध्वस्त होने से षिया व सुन्नी मुसलमानों को कितना दुख हुआ इसका अनुमान ख़्वाजा हसन निज़ामी के बयान से होता है जो उन्होंने मासिक 'मुनादी' नई दिल्ली के दिसम्बर 1968 के अंक में ईरान व इराक़ के ज़ियारत नामे (दर्शन वृत्तान्त) में जब उन्होंने इमामे रिज़ा के रौज़े के हालात लिखने के बाद लिखा हैः

"यहाँ की हालत और विशेषता के साथ मदीने का ख़याल बन्ध जाता है। आँखों के सामने बक़ीअ का क़ब्रिस्तान आ जाता है। सब टूटा हुआ, सब बे साया, न गुम्बद, न क़ब्र की चादर, न फूल, न पेड़ों की छांव, न घास की दो पत्तियाँ।"

मेरी अक़्ल हैरान है, चक्कर में है कि जब रसूल हुजरे में आराम कर सकते हैं, जब रसूल के आराम की जगह पर गुम्बद बन सकता है, जब हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर कोठरी में दफ़्न हो सकते हैं और उनको वहाँ दफ़्न करने वाले सहाबी हैं सहाबी वे जिन्होंने इस्लाम को सीधे इस्लाम लाने वाले (रसूल) से सीखा, उन्होंने हुर्जों (कमरों/कोठरियों) के अन्दर इमारतों (भवनों) के नीचे दफ़्न होने में कोई बुराई नहीं देखते, फिर आज मक़बरों को ढाने और ध्वस्त करने का हक़ किसी को कैसे पहुँच जाता है। क्या ये क़ब्र तोड़ने वाले, सहाबियों से ज़्यादा दीन को समझ सकते थे? और क्या सहाबी इन लोगों के मुक़ाबले में कम दीनदार थे?

बात वास्तव में यह है कि अच्छाई और बुराई, सत्य और असत्य की लड़ाई कभी ख़त्म नहीं होती।

मक्के ओर ताएफ़ की तकलीफ़ें,
बद्र व उहद की चढ़ाइयाँ,
सिफ़्फ़ीन व करबला के संग्राम

वही सिलसिले का सिलसिला आज भी मौजूद है। मुहम्मद[स०] और मुहम्मद[स०] वालों को दुनिया के कठिन इम्तिहानों में सब्र का नमूना दिखाना है, जब भी दिखाया अब भी दिखा रहे हैं।

अल्लाह मदीने के गुम्बद को सलामत रखे, अगर उसका बनना और बाक़ी रहना जाएज़ है तो क्या कोई उस दुःख का अन्दाज़ा लगा सकता है जो इस हरे गुम्बद वाले को अपनी इकलौती लाडली बेटी और अपने चहेते नवासे हसन[स०] और दूसरे कितने ही प्यारों की टूटी क़ब्रों और बेसाया मज़ारों को देखकर होता होगा।

अल्लाह तआला उस दिन की सुबह किसी मुसलमान को नसीब न करे जिस दिन उसकी ज़बान या कार्य से रसूल[स०] को दुःख पहुँचे।

l ekIr

अली नक़ी नक़वी

जिन किताबों से सहायता ली गई हैः—

1. ख़िलाफत व इमामत
2. तारीख़े नज्द
3. अत्तौहीद अल्लज़ी होआ हक़्क़ुल्लाह अललअबीद — ईब्ने अब्दुल वहाब
4. मुस्लिम
5. बुख़ारी
6. नहजुलबलाग़ा
7. जोहरुल मुनज़्ज़म फ़ी ज़ियारति क़ब्रिन् नबीयि लमुकर्रम — अल्लामा ईब्ने हजर मक्की
8. अशरफुल वसायिल इला फ़हमि शिमायिल
9. हल्लुल मआक़िद हाशिया शरहे अक़ाइद —

मौलाना अब्दुल हलीम फ़िरंगी महली
10. दुररेकामना पहला भाग – इब्ने हजर मक्की
11. तारीख़ – ज़हबी
12. मिरातुलजिनान – याफ़ई
13. तारीख – अबुलफ़िदा
14. खुलासतुल मकाल फ़ी शदुदिररिहाल – सय्यद मुस्तफ़ा नूरूद्दीन हुसैन
15. इन्सानुल उयून – अली बिन बुरहानुद्दीन शाफ़ई
16. शिफ़ाउ सक़ाम फ़ी ज़्यारत ख़ैयरूल अनाम क़ाज़ी उल कुज़ात शेख हाफ़िज़ तक़ीउद्दीन सुब्बकी
17. मुन्तहिउल मिक़ाल फ़ी शरहे हदीसे ला तशददिररिहाल मुफ़्ती सदरूद्दीन
18. इतहाफ़ अहलुलइरफ़ान बरिवायत अम्बिया वल मलाएका वलजान – शेख़ मुहम्मद बरनसी
19. नसीमुर्रियाज़ शरहे शफ़ा काज़ी अय्याज़ – अहमद शहाबुद्दीन ख़िफ़ाजी
20. शरहे शिफ़ा – मुल्ला अली क़ारी
21. कश्फ़ुज़्ज़ुनून
22. मुसतदरक – हाकिम
23. मुअजम कबीर – तबरानी
24. मुअज़मे औसत – तबरानी
25. हिलयतुल औलिया – अबू नईम इस्फ़हानी
26. जामए कबीर – हाफ़िज़ सुयूती
27. खसाईसे कुबरा – हाफ़िज़ सयूती
28. दलाइल – बैहक़ी
29. तारीख़ – बुख़ारी
30. किताबुल मअरिफ़त – अबू नईम
31. शरहे दलाईले ख़ैयरात
32. नहजतुल महाफ़िल – इमादुद्दीन आमरी
33. दलाइलुन्नुबूवा – हाफ़िज़ अबू नईम
34. अलबयान वत्तबयीन – जाहिज़
35. उसदुलग़ाबा – इब्ने असीर जज़री
36. इस्तीआब – इब्ने अब्दुल बर
37. ज़ादुलमआ़द – इब्ने क़य्युम
38. तारीख़ – इब्ने ख़ल्लिकान
39. सुनन – इब्ने माजा
40. हाशिया सुनन इब्ने माजा – मुहद्दिस सुनदी
41. मुवाहिबे लदुन्निया – क़स्तलानी
42. हिस्ने हसीन – शम्सुद्दीन जज़री
43. जज़्बुल कुलूब – मुहद्दिस देहलवी शाह अब्दुल हक़
44. शिफ़ा – क़ाज़ी अय्याज़
45. औराके बग़दादिया – सैयद इब्राहीम रावी रिफ़ाई
46. वफ़ा – सम्हूदी
47. तज़किरतुस सामे वल मुतकल्लिम – शेख बद्रूद्दीन बिन इब्राहीम कक्आनी
48. अदबुल इमला वल इस्तिमला – अब्दुल करीम समआ़नी
49. मुहाज़िरतुल अबरार – शेख़ मुहयुद्दीन इब्ने अरबी
50. इसाबा – हाफ़िज़ इब्ने हजर
51. मुहाज़रतुल अवाएल
52. जमअ बैनस्सहीहैन
53. मुसनदे अहमद
54. सुनने इब्ने दाऊद
55. तारीखे नज्द – आलूसी
56. तफ़्सीरे कबीर – इमाम राज़ी
57. किताबुल आलिम वल मुतअल्लिम – इमाम अबूहनीफ़ा
58. जामए कबीर – जलालुद्दीन सुयूती
59. अमलूल्यौम वल्लैला – हाफ़िज़ अबू नईम अस्फ़हानी
60. किताबुददावात – हा0 जलालुददीन सुयूती
61. ख़ैराते हिसान फ़ि मनाक़िबि – अबू हनीफ़ा अन्नुमान इब्ने हजर अस्क़लानी
62. बानीए दरसे निज़ामी – मुफ़्ती मुहम्मद रिज़ा अन्सारी
63. फतवा फ़ी जवाज़े या – शेख़ अब्दुल क़ादिर
64. यनाबीउल मुवददा – शेख सुलैमान बलख़ी
65. किफ़ाया – शेबी
66. फ़तावाए ग़राएब
67. मतालिबुल मोमिनीन

68. ख़ज़ानतुर्रिवाया
69. अबजदुल उलूम – नवाब सिददीक़ हसन ख़ाँ क़न्नौजी
70. महवुल हूबा फ़ी शरहे अबयातिततौबा – सनआई मुहम्मद बिन इस्माईल
71. रद्दुल मुख्तार – सैयद मुहम्मद अमीन बिन उमर 'इब्न आबिदीन'
72. तौज़ीह – सुलेमान बिन अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब
73. अल हिस्न वल जुन्ना अला अक़ीदति अहलुस्सुन्ना – शैख मुहम्मद यूसुफ़ ''काफ़ी''
74. शरहत् तौहीद
75. कश्फुश्शुबहात फ़ी तशकीक बिल मुशाबहात – मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब
76. कश्लुल अवाब
77. ज़ादुलमआद
78. वफ़ाउलवफ़ा
79. सवाएकुल मुहर्रिक़ा – अल्लामा इब्ने हजर
80. औराक़े बग़दादिया
81. मआलिमुत्तनज़ील – बग़वी
82. लुबाबुत्तावील – ख़ाज़िन
83. तफ़्सीरे जलालैन
84. कश्शाफ़
85. अबुस्सऊद
86. तन्वीरूल मिक्बार – इब्ने अब्बास
87. ग़राएबुल कुरान
88. शरहे सहीह मुस्लिम – नूदी
89. सिराते मुस्तक़ीम – शैख़ तक़ीउद्दीन इब्ने तैमिया
90. अल अदलुश्शाहिद फ़ी तहक़ीक़िल मुशाहिद – उस्मान बिन बददाख शाफ़िई
91. फ़स्लुल ख़िताब – मुहद्दिस ख्वाजा पारसा
92. रिसाला उम्मुल कुरा 4 जमादिउल ऊला 1345 हि0 – अब्दुल्लह बिन सुलैमान
93. उम्दतुत्तालिब – जमालुददीन ऐनीया
94. हबीबुस्सियर
95. कामिल – इब्ने असीर
96. रौज़तुस्सफ़ा
97. तारीखुल खुलफ़ा – सुयूती
98. शरहे मिष्कात
99. मजमउल बिहार – मुहद्दिस मुहम्मद ताहिर कुतनी
100. वसाइलुश्शिया – शेख हुर्रे आमिली
101. मिस्बाहुल मुनीर – फ़ितूनी
102. तफ़सीर रूहुल मआनी
103. जहरूर्रिबा – हाफ़िज़ सुयूती
104. तफ़सीरे बैज़ावी
105. हाषिया सुनने निसाई – अल्लामा सिन्दी मदनी
106. कुनूजुल हक़ाएक़ – मुनादी
107. फ़त्हुल बारी
108. इहयाउल उलूम – ग़िजाली
109. निहाया – इब्ने असीर
110. अल इ'लाम बैतुल्लाहिर्रल हराम
111. तोहफ़तुल बारी
112. इरशादुस्सारी
113. क़िताबुल इलल वस्सुआलात – अब्दुल्लाह बिन अहमद बिन हंबल
114. मुस्तदरकुल मसाइल – अल्लामा नूरी
115. सिहाहे जौहरी
116. तहज़ीब
117. क़ामूसुल अम्किना वल् बकाअ
118. खुलासतुल कलाम
119. बिहारुल अनवार – अल्लामा मजालिसी
120. मिफ़्ताहुल किरामा – सैयद मुहम्मद जवाद आमली
121. तारीखे अजाइबुत असर – ज्रबरती
122. नूरुल अबसार
123. इस्आफ़ुल राग़िबीन – मुहम्मद बिन हय्यान
124. अख़बारुल अव्वल – अबुल अब्बास अहमद बिन यूसुफ़ दस्ती
125. आसारुल अव्वल – अबुल अब्बास अहमद बिन यूसुफ़ दस्ती
126. किताबुल इस्तीआब – इब्ने अब्दुल बर
127. रिसालाए मुनादी दिसम्बर 1968 – ख़्वाजा हसन निज़ामी नई दिल्ली

[kyhy vkS t ebg dhdfrZ

eksykuk g u vCck fQ+jr lkgc

कुर्बानी अर्थात बलिदान का इतिहास उतना ही प्राचीन है जितना मानवता का इतिहास और यह भी सर्वमान्य सत्य है कि बलिदान और त्याग मानवता का सत् और सर्वश्रेष्ट भाव है जिस पर बलिदानी एवं त्यागी को गौरव और हर्ष की अनुभूति होती है। उसका बलिदान स्वीकार हो जाने पर जितनी प्रसन्नता होती है, रद्द होने पर उतना ही कष्ट और ग्लानि होता है परन्तु परमेश्वर के यहाँ स्वीकृति–अस्वीकृत का माप–दंड मन की शुद्धता और ईश्वर से प्रतिबद्धता है और कुछ नहीं। लेशमात्र भलाई का स्वीकार करना और बहुत सी बुराइयों का क्षमादान उसकी विशेषता है। हज़रत **^vkne**** के पुत्रों का वृत्तांत क़ुआन पाक में है, दोनों ने अल्लाह की राह में कुर्बानी भेंट की। एक के यहां मन की शुद्धता थी दूसरे के यहां कपट। शुद्धता वाले **¼gkchy½**की कुर्बानी क़ुबूल हुई तो वह उसी में डूब गया और हत्या की धमकी की भी अपेक्षा कर गया और कपट वाले **¼dkchy½**कुर्बानी रद्द हुई तो वह क्रोध में अंधा हो गया और अपने सगे भाई और साथी को मार डाला। परन्तु जनाब इब्राहीम ख़लील (अ0) का प्रसंग ही अलग है वह पैग़म्बर थे और महिमामयी **¼myqy vte½** पैग़म्बर। उनका बचपन क़ौम कबीले के विरोध, मूर्तिभंजन और अल्लाह के अतिरिक्त अन्य से लौ लगाने के विरूद्ध धर्मयुद्ध में बीता, दंडस्वरूप "नमरूद" की आग में डाले गए, बेघबार हुए तो मानव जाति की हिदायत का चिराग़ प्रत्येक गली–कूचे में जलाते फिरे। ख़ानाबदोशी के जीवन में भी पैग़म्बरी का ध्वज ऊंचा किए रहे। प्रत्येक कठिन दौर और कड़ी मन्ज़िल से गुज़रे मगर सत्यवाद के प्रचार की तीव्र गति में फ़र्क नहीं आया। पिछली अवस्था में पुत्र लाभ से सम्मानित हुए तो ईश्वर को धन्यवाद दिया परन्तु सन्तान न होने पर कभी गिला नहीं किया था। और जब वही बच्चा बड़ा हुआ, चलने–फिरने लगा तो अल्लाह नेउसे ऐसे ढंग से वापस मांगा जिसका अनुपालन अल्लाह के ख़लील ही कर सकते थे। परन्तु यथार्थ यह है कि यह कारनामा केवल इब्राहीम (अ0) का ही नहीं, इस्माअ़ील ज़बीह (अ0) का भी है। **mUgksaus vR;a d efl uheaft l izdkj viusdksgfj bPNk dsi zfr lefiZ fd;k og Hkh ^tebg** dkgh dke FkkA** दोनों में ईश्वरीय आसक्ति का भव बराबर था। दोनों सच्ची आसक्ति के उस स्थान के वासी थे जहां सिन व साल और अन्य दूसरे आयामों और लगावटों का बन्धन समाप्त हो जाता है वह साक्षात् तपन होते हैं, उनका अन्दाज़ संसार से निराला होता है। कअ़बे की स्थापना ऐसी ही साक्षात् और आसक्ति में मिटी हुई उंगलियों की राह देख रही थी। "इब्राहीम" (अ0) थे जिन्होंने एक हाथ से दुनिया के प्रत्येक बुत को टुकड़े–टुकड़े करके रख दिया तो दूसरे हाथ से आत्म–प्रेम, संसार –प्रेम की मूर्तियों को चूर–चूर कर डाला। दूसरे "इस्माअ़ील" अ0) जिन्होंने आज्ञापालन की दो मोटी ज़ंजीरें पहनकर परीक्षण की कांटों भरी और यातनादायी घाटी को तय किया। एक तरफ़ आपाती पालने वाले (बाप) के आज्ञा–पालक रहे तो दूसरी ओर वास्तविक पालने वाले के आदेश पर धैर्य बनाए रखा। संक्षेप में यह कि **vYykg dh /kjrh dh T;ksfrghu vk[kksa dks ft l elhgk dh [kks Fkh mlsog fey x;kA** मूर्ति भंजन का पुरस्कार इब्राहीम (अ0) को यह मिला कि सकल संसार के "क़िब्ले" के निर्माण का सम्मान उनको प्राप्त हुआ। कअ़बे के निर्माण के बअ़द उन्हें आदेश हुआ, कि **^vc ykxksa**

dksbl ?kj dhifjØek dsfy, iqdkjkA ykx tehu dh xgjkb;kavk$ igkM+dh pksfV;kal s iSny o lokj vk;saxs vk$ >wM ds >wM vk;saxsA** तुम्हारी जगह (मुक़ाम–ए–इब्राहीम) (अ0) पर नमाज़ पढ़ेंगे ''इस्माई़ल'' के नाम पर बलि चढ़ाऐंगें, और यही हुआ कि कल तो मात्र दो हाजी थे–''इब्राहीम (अ0) और इस्माई़ल'' (इ0) के रूप में। आज दो मिलियन से अधिक होते हैं उनके बेटे और लाखों कुर्बानियां मिना में दी जाती हैं।

अल्लाह की राह में धन की कुर्बानी के कई रास्ते हैं ijUrq ftgkn dsvfrfjDr tku dh dqckZuh dk ,d gh jkLrk g$ जिसका सर्वश्रेष्ठ समय और अवसर cdj+vhn है। इसलिए इस कुर्बानी में अत्यन्त पुण्य है। इसकी बड़ी ताकीद है और उधार लेकर भी कुर्बानी करने की हिदायत की गई हैं अगर अकेला एक आदमी एक कुर्बानी करने की सामर्थ्य न रखता हो तो दो आदमियों से लेकर सत्तर तक शरीक हो सकते हैं मगर कुर्बानी करना ही चाहिए। उतनी ही या उससे अधिक धनराशी की ख़ैरात इसका विकल्प नहीं हो सकती। यह न समझना चाहिए कि कुर्बानी केवल हाजियों के लिए है। क्योंकि प्रत्येक समर्थ व्यक्ति हर साल हज्ज की यात्रा नहीं कर सकता है परंतु प्रत्येक वर्ष कुर्बानी करके इस महान जिहाद में शरीक होना और कुर्बानी, शहादत, त्याग और इन्द्रिय दमन का जीवित करना संभव है। अन्य कोई मार्ग नहीं अलबता ;g lc ek= bZoj ds fy, gksuk pkfg,A इसमें व्यक्तिगत स्वार्थ, मनोकामनाएं, मनोवृत्ति का झुकाव और रूज्हान का हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए। नहीं तो न प्रतिफल मिलेगा और न उसका लाभ प्राप्त हो सकेगा बल्कि वास्तव में जो कुर्बानी की ई़द का दर्शन है वह भी नमक समान धुल कर पानी हो जायेगा।

jk"Vª fuekZk esa cdj+vhn dh Hkwfedk

इस महान घटना में मानव जगत के लिये सामान्य रूप से और ''ख़लील'' की संतान के लिए विशेष रूप से हिदायत के अनमोल नमूने छिपे हुए हैं। सत्य पूजन और मूर्तिभंजन के अतिरिक्त gekjs lkeusgd tho dk xBu vk$ n`<+k] jpuk vk$ fodkl dh dqath bl hvnHkqr~?kVuk esagSA सत्य सुनने वाली श्रवण शक्ति हो तो सुनाई देगा कि यह दिन हमको प्रत्येक वर्ष याद दिलाता है कि ^cqtqxksZa dk Loiu uo;qod gh lkdkj djrsgSA** बुजुर्गों का कार्य परामर्श देना है और जवानों का उसे कार्य रूप प्रदान करना। iqjkuh vk$ ubZ ih<+h dh psukijd ,oaQkogkfjd ,drk gh jk"Vªh; fodkl dsHkou dksxxupqEch cukrh gSA अगर बाप–बेटे के दृष्टिकोण में यकसानी न होती तो न यह घटना घटती न कअ़बा अल्लह का घर और लोगों के मार्ग दर्शन और स्थापना का कारण बनता और न ''इब्राहीम'' (अ0) को ''सामान्य सरदारी'' (इमामत्–ए–आम्मा) मिलती न ''इस्माई़ल'' (अ0) को पैग़म्बरी और न मोक्ष प्राप्त पंथ ¼mEer&,&egEnk½ dks tEg&,&vtke ¼egkcfynku½ dk vFkZA

इस प्रज्वलित घटना की आभा आज भी प्रकाश बिखेर रही है। ''इस्लामी ईरान'' की ध ारती पर इसी सत्य का उजाला फैला है हम देख रहे हैं कि राष्ट्र के एक बुजुर्ग मूर्ति विरोधी ने पिशाची शासन को निर्मूल करके vYYkkg] dqeku vk$ bLyke dh gdqwer LFkkfir djus का स्वप्न देखा था जिसे साकार रूप में बदलने और स्वप्न को सच कर दिखाने के लिए देश के जवान लगातर पन्द्रह वर्ष तक धूल और रक्त के सागर में तैराकी करते रहे और ''इस्माई़ल'' (अ0) के हज़ारों हज़ार बेटों ने ''ईरानी पंथ'' के इब्राहीम (अ0) की आवाज़ पर ''लब्बैक'' अर्थात हाज़िर हुआ, उपस्थित हुआ कहते हूए मन–प्राण की भेंट प्रस्तुत की। जिसके फलस्वरूप bLyke dsijtpaHkd dky ds mijkUr igysigy nqfu;k esa lPph bLykeh gdqwer LFkkfir gqbZA जिसकी

धमक से अनीश्वरवाद के प्रासादों में कम्पन है। पिशाची सेना पिछड़ चुकी है प्रत्येक ''नमरूद'' की बोलती बन्द है और संसार के सभी दुर्बलों और बेबसों में नई शक्ति का संचार हुआ है और जब तक ''इब्राहीम'' (अ0) और ''इस्माअ़ील'' (अ0) की पद्धति के अनुसार आचरण होता रहेगा, यह प्रकाश फैलता ही जायेगा और यह संभव नहीं कि कालिमा मुँह छिपाने पर विवश हो और मनुष्य के स्वातंत्रा और ईश्वर की अधिकारिता की मशाल से दुनिया का हर कंगूरा प्रकाशित हो जाए।

आज सकल संसार की पिशाची पलटनें ईरान को नीचा दिखाने पर तुली हैं। मगर उनकी पराजय अपयश कुछ प्राप्त नहीं हो रहा है। छह बरस की लंबी अवधि तक आर्थिक घेराव में रहकर शत्रुओं के दांत खट्टे कर देना केवल त्याग और बलिदान की भावना द्वारा संभव हुआ है। जो ''हे ख़ुमैनी ! मैं उपस्थित हुआ'' के रूप में गूंज रहा है। **bZku dh vfMxrk vkS egku lkaLd`fr lsnqHkk;k dks,d uohu n'kZu] uohu thou i)fr dk lw= fey jgk gS vkS og gS bLykeA** जिसकी ओर दिन प्रतिदिन विकसित संसार का आकर्षण बढ़ता जा रहा। वह इस्लाम जो इब्राहीम (अ0) का दीन था। जिसे क़ुर्आन से कभी दीन–ए–क़य्यिम। सीधा दीन (कभी मिल्लत–ए–हनीफ़) असत्य से कतरा के चलने वाले इब्राहीम का पंथ कहा और ख़ुदा अपने दोस्त को गर्व के साथ इसके अनुसरण का आदेश देता है और इसे सीधा मार्ग कहता है।

''कहो ! मेरे पालने वाले ने मुझे सीधे मार्ग का निर्देश कर दिया है वह सीधा धर्म और असत्य से कतरा के चलने वाले इब्राहीम (अ0) का पंथ है जो अनेकेश्वरवादी नहीं थे। कहो कि मेरी नमाज़, उपासना, जीवन–मरण, सभी लोकों के पालने वाले के लिए है। उसका कोई साझी नहीं और इसी का मुझे आदेश दिया गया है और मैं प्रथम मुस्लिम हूँ।''

●●●

xnhj

बिन्ते ज़हरा नक़वी नदल हिन्दी

नबी कब ख़ुम में ख़ुतबा पढ़ रहे हैं
बहुक्मे रब क़सीदा पढ़ रहे हैं
मलाएक वज्द में हैं क्यों कि अहमद
पसन्दीदह तराना पढ़ रहे हैं
समा–ए–ख़ुत्बा सामे को मुबारक
मगर हम आज लहजा पढ़ रहे हैं
मवद्दत रेज़ लहजे से है साबित
मोहब्बत का सहीफ़ा पढ़ रहे हैं
नदा अशआर जितने लिख चुकी है
उन्हें अक्सर अइज़्ज़ा पढ़ रहे हैं

●●●

सुन चुके हैं लोग पैग़ामे ग़दीर
चल रहे हैं बज़्म में जामे ग़दीर
क्या अजब है सुबह और शामे ग़दीर
रौनके आलम है अय्यामे ग़दीर
माहसल तबलीग़ का पूरा हुआ
आज कल है दीन इस्लामे ग़दीर
अरश रुत्बा फ़रश पर बैठे हैं आज
कम से कम इतना है इकरामे ग़दीर
हर तरफ सुनते हैं बख़्ख़िन की सदा
है ज़बाने ज़रे अहकामे ग़दीर
ले चले हुज्जाज बहरे अक़रेबा
तोहफए तबरीक व पैग़ामे ग़दीर
मनज़िले अनवार है मदफ़न नेदा
मरते ही पाया ये इनआमे ग़दीर

●●●

bele elgEen clfdj+ ¼v0½dh 'kgknr

odkj+ elgfl u vkfcnh lkgc

हज़रत इमाम मो0 बाक़िर (अ0) हज़रत मो0 मुस्तफ़ा (स0) के पांचवें जा नशीन और हमारे पांचवे इमाम सिलल्लिः–ए–इस्मत की साँतवीं कड़ी थे। आपके वालिदे माजिद सय्यदुस्साजिदीन इमाम ज़ैनुल आबिदीन (अ0)थे। वालिद–ए–माजिदा उम्मे अब्दुल्लाह फ़ातिमा बिन्ते हज़रत इमाम हसन (अ0) थी। उलमा का इत्तिफ़ाक़ है कि आप बाप और माँ दोनों की तरफ़ से अलवी और फ़ातिमी नजीबुत्तरफ़ैन हाशिमी थे। नसब का यह शरफ किसी को भी नहीं मिला। आप हमारे सभी इमामों की तरह से मासूम थे और सभी फ़ज़ीलतों के मालिक थे। आपकी विलादत यकुम रजब सन 57 हि0 यौमे जुमआ मदीन–ए–मुनव्वरा में हुई। आपकी कुन्नीयत अबुजाफ़र थी। मशहूर आप बाक़िर, हादी से थे।

आपके वक़्ते पैदाइश से लेकर आख़िरे हयात तक कई बादशाह गुज़रे मगर आप के इमामत पर फायिज़ होते वक़्त सन 15 में वलीद–बिन–अब्दुल मलिक के बाद सुलेमान–बिन–अब्दुल मलिक, अम्र बिन अब्दुल अज़ीज़, यज़ीद बिन अजुल मालिक और हिशाम बिन अब्दुलाह बादशााहाने वक़्त गुज़रे। वाकिय–ए–करबला में आप की उम्र 4 साल थी। आपने अब्दुल मालिक के वक़्त में ही दिरहम व दीनार के सिक्के ढलवाये। और इन सिक्कों को तमाम इस्लामी मुल्कों में रायिज करवा दिया और जो रूमी सिक्का चल रहा था उसे टिकसाल बाहर क़रार दिया।

जब आपकी उम्र तक़रीबन 38 साल की थी तब वलीद बिन अब्दुल मलिक ने आपके वालिदे माजिद को ज़हरे दग़ा से शहीद कर दिया। आपको आपके वालिद ने शहादत के वक़्त अपने बाद अपना वसी मुर्क़रर फर्माया।हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर ¼v0½ चूंकि इमामें ज़माना और मासूमे अज़ली थे। इसलिये आपके इल्मी कारनामों और आपकी इल्मी हैसियत की वज़ाहत ना मुमकिन है।

आप अपने आबा व अज्दाद की तरह बे पनाह इबादत करते थे। सारी रात नमाज़ पढ़ते और सारा दिन रोज़े से गुज़रता था। आप बहुत ही ज़ाहिदाना ज़िन्दगी के मालिक थे। गरीबों में फ़कीरों में हदये को तक्सीम कर देते थे।

अल्लामा मजलिसी लिखते है कि हिशाम बिन अब्दुल मलिक अपने अहदे हकूमत के आख़िरी अय्याम में हज्जे बैतुल्लाह के लिये मक्क–ए–मुअज़्ज़मा पहुंचा। वहां हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर ¼v0½ और हज़रत इमाम जाफ़र सादिक ¼v0½ मौजूद थे। एक दिन हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक ¼v0½ ने लोगों के बीच में एक ख़ुत्बा इरशाद फर्माया जिसकी ख़बर हिशाम को मिली वह वहां तो खामोश रहा दमिशक पहुंचा और वालि–ए–मदीना को ख़त लिखा कि मुहम्मद बिन अली और जाफ़र बिन मोहम्मद को मेरे पास भेज दो जब आप हज़रात दमिशक पहुंचे तो वहां हिशाम ने आपसे तीन रोज़ तक मुलाकात नहीं की। आख़री रोज़ जब दरबार सज गया तो आपको बुलवा लिया।

आप जब दाख़िले दरबार हुवे तो आपको मुआज़ल्लाह खफ़ीफ़ करने के लिये, आपसे कहा कि हमारे तीरअंदाज़ों की तरह, आप भी तीरअंदज़ी करें। हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर ¼v0½ ने फर्माया मैं ज़ईफ हो गया हूं। मुझे इस से मुआफ कर। उसने बक़सम कहा यह नामुम्किन

है। एक तीर और कमान आपको दिलवा दी गयी। आपने तीर ठीक निशाने पर लगाया। यह देख कर वह हैरान हो गया। हिशाम ने अहले दरबार को हुक्म दिया था कि मैं मुहम्मद बिन अली (इमाम मुहम्मद बाक़िर अ0) को सरे दरबार ज़लील करूंगा। तुम लोग यह करना कि जब मैं खामोश हो जाऊँ तो उन्हें कालिमाते नाशायिस्ता कहना। चुनाँचे ऐसा ही किया गया। आखिर में हज़रत ने फ़रमाया ''बादशाह! याद रख हम ज़लील करने से ज़लील नहीं हो सकते, ख़ुदा बन्दे आलम ने हमें जो अिज़्ज़त दी है। उसमें दम मुनफरिद है''। चुनाँचे आपको कैद कर दिया गया।

अल्लामा मजलिसी तहरीर फर्माते है कि हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर (अ0) क़ैद खाने से रिहा हो कर मदीने को तशरीफ ले जा रहे थे राह में कसीर मजमा नज़र आया। आपने हाल मालूम किया तो पता चला कि नसारा का एक राहिब है जो साल में सिर्फ एक बार अपने माबद से निकलता है।

आज उसके निकलने का दिन है। हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर (अ0) उस मजमे में बैठ गये। राहिब जो बहुत ज़ईफ थे अपने मुकर्रर वक़्त पर निकलता और चारों तरफ निगाह दौड़ाई फिर इमाम से मुतवज्जेह हुवे और आपसे सवाल पूछा जिसका जवाब इमाम ने दिया।

जवाब सुनकर राहिब अपने मानने वालों की तरफ मुड़ा और कहने लगा ''यह शख़्स शाम के हदूद में मौजूद है मैं किसी के सवाल का जवाब न दूंगा सब को चाहिये कि इस आलिमे ज़माना से सवाल करें''। इसके बाद वह मुसलमान हो गया।

आपके इल्म की वजह से पूरा इस्लाम तेज़ी से बढ़ रहा था। इसके बावजूद हिशाम बिन–अब्दुल मलिक ने आप को ज़हर के ज़रीअे शहीद करा दिया। और आप बतारीख 7 ज़िल हिज्जः सन 114 हि0 दोशम्बा मदीनः–ए–मुनव्वरा में शहीद हो गये। उस वक़्त आपकी उम्र 57 साल की थी। आप जन्नतुल बकीअ् में दफ़्न हुवे। आप अपने ज़द–ए–बुज़ुर्गवार की तरह ज़हर से शहीद कर दिये गये। रिवायतों में है कि आपकी शहादत खलीफ़ः–ए–बक़्त हिशाम बिन अब्दुल मलिक की मुरतलः ज़हर आलूद ज़ीन के ज़रीअे से वाक़े हुवी थी। शहादत से पहले आपने इमाम जाफर सादिक (अ0) से बहुत सी चीज़ों के मुतअल्लिक वसीयत फर्मायी।

आपने गुस्ल व कफन के मुतअल्लिक़ ख़ास तौर से हिदायत की क्योंकि इमाम को इमाम के सिवा कोई और गुस्ल नहीं दे सकता है। आपने अपनी वसीयत में यह भी कहा कि 800 दिरहम मेरी अज़ादारी और मेरे मातम पर सर्फ करना और ऐसा इन्तिज़ाम करना कि दस साल तक मिना में बज़मानः–ए–हज्ज मेरी मज़्लूमीयत मौत का मातम किया जाये। अपनी कब्र के मुतअल्लिक़ वसीयत की कि मेरे बन्दहा–ए–कफ़न कब्र में खोल देना और मेरी कब्र चार अुन्गल से ज़ियादा ऊंची न करना।

आपकी चार बीवियां थीं और उन्ही से औलाद हुई। अुम्मे फरवा उम्मे हकीम, लैला और एक और बीवी अुम्मे फरवा बिनते क़ासिम बिन मोहम्मद बिन अबीबक्र जिन से हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक ¼v0½और अब्दुल्लाह पैदा हुवे।



d`jvku i<+uk pkfg,

fcUr st+gjkud+ehuny fgUnh

ख़ालिक़े मौतो हयाते आदमी का है कलाम
जीने वाले इसलिये कुरआन पढ़ना चाहिए
इसलिये भी क्योंकि फ़िल वाक़े है दस्तूरे हयात
ज़िन्दगी के वास्ते कुरआन पढ़ना चाहिए



शियों और सुन्नियों में कोई तहरीक़ का मुख़ालिफ नहीं: क़ायदे मिल्लत मौलाना कल्बे जवाद

14 अगस्त 2015ई0 जुमे को क़ायदे मिल्लत मौलाना सैय्यद कल्बे जवाद नक़वी ने फ़रमाया कि हम ने हमेशा मसाएल को बात चीत के ज़रिये सुलझाने की कोशिश की है इस लिये हम ने दिल्ली में समाजवादी पार्टी के सरबराह श्री मुलायम सिंह यादव से मुलाकात की थी और उन्होंने 14 अगस्त का दिन तै किया था लेकिन वह अपनी किसी मसरूफियत की वजह से लखनऊ नहीं आ सके। जल्द ही उन से मुलाकात होगी। एक या दो दिन के फ़ासले से फर्क नहीं पड़ता है। उनसे मुलाक़ात एक दो दिन में ज़रूर होगी और उम्मीद है मसाएल भी हल हो जायेंगे हम बात चीत के ज़रिये मसायल का हल निकालना चाहते है। अगर बात चीत नाकाम होती है तो हम उलमा और अन्जुमनों से मीटिंग के बाद आगे का रणनीति तय करेगें। उन्होंने ने कहा कि हमारी क़ौम के नौजवान दोबारह जेल भरो आन्दोलन के लिए आमादा हैं। इन्हें अत्याचार के ज़रिये ख़ौफज़दा नहीं किया जा सकता। जो जेल से छूट कर आये हैं उनके हौसले और बलन्द हुये हैं। मौलाना ने कहा कि वक़्फ़ बचाव तहरीक़ की मुख़ालिफत न कोई शिया करता है और न हमारे बरादराने अहले सुन्नत इस तहरीक के मुख़ालिफ है। तहरीक़ की मुख़ालेफत वह करते हैं जिन्होंने कहीं न कहीं कुछ बेईमानी की होती है। हुकूमतों की हमेशा ये साज़िश रही है कि शिया सुन्नी एकता न हो इस लिये दोनों तरफ के लोगों के ज़रिये इनतेशार फ़ैलाया जाता है। उन्होंने ने कहा कि हमारे साथ अहले सुन्नत की बड़ी तादाद है और इनशा अल्लाह जल्द ही हम अहले सुन्नत की बड़ी जमाअत के साथ अपने हुक़ूक़ की बाज़याबी और मुसलमानों के तरक़्की व फ़लाह व बहबूद के लिये अज़ीमुशान कॉनफ्रेन्स करेगें जिस में शिया सुन्नी इत्तेहाद का मुज़ाहेरा होगा। आख़िर में क़ायदे मिल्लत ने तमाम हिन्दुस्तानी बाशिन्दों को यौमे आज़ादी की मुबारकबाद भी पेश की।

उत्तर प्रदेश में सदर राज नाफ़िज़ हो, सूबे में जंगल राज है: मौलाना कल्बे जवाद

27 जुलाई को शाही मस्जिद हज़रत गंज में नमाज़ पढ़ने पर पाबन्दी लगाये जाने, मासूम नमाज़ियों, उलमा, औरतों और बच्चों पर लाठी चार्ज और नौ जवानों की गिरफ़्तारी पर सख्त रुख़ अपनाते हुये कायदे मिल्लत मौलाना सैय्यद कल्बे जवाद नक़वी ने कहा कि प्रशासन ने बरबरियत का प्रदर्शन किया है। हमे शाही मस्जिद में नमाज़ पढ़ने से रोका गया और नमज़ियों पर लाठियाँ बरसाई गई। हम ने सिर्फ ये एलान किया था कि 1 बजे शाही मस्जिद में नमाज़ अदा की जायेगी लेकिन प्रशासन ने मस्जिद में जाने से रोक दिया और पुलिस मस्जिद में जूते पहने हुये दाखिल हुई।

मौलाना ने कहा कि पुलिस ने बहुत ज़ुल्म के साथ औरतों और बच्चों को मारा औरतों की गोदो में जो बच्चे थे उन पर भी लाठियाँ बरसाईं। ये वही काम कर रहे हैं जो शाम, इराक़ और फिलिस्तीन में इसराईल कर रहा है। मौलाना ने कहा कि प्रशासन ने हमारी मस्जिद पर ताला डाला और नमाज़ियों को नमाज़ पढ़ने से रोका गया। हम ने जब डी0 एम0 और ए0 डी0 एम0 से नमाज़ पढ़ने की इजाज़त चाही तो उन्होंने साफ इनकार कर दिया। ये ज़ुल्म किसी सूरत से बर्दाशात नहीं किया जायेगा और हमारी तहरीक जारी रहेगी।

इन्केलाब के दुश्मनों से मुकाबिले के लिये ईरानी फ़ौज मुकम्मल तैयार

ईरानी फ़ौज के ख़ातिमुल अम्बिया ऐयर डीफेन्स मरकज़ के सर बराह ने दुश्मन से मुकाबले के लिये ईरान की मुसलह अफवाज की आमादगी को इस मरकज़ की ताकत की अलामत करार दिया है।

रिपार्ट के मुताबिक इस्लामी जमहूरिया ईरान की फ़ौज के खातिमुल अम्बिया (स0) ऐयर डीफेंस मरकज़ के सरबराह ब्रीगेडियर जनरल फरज़ाद ईसमाईल ने कहा कि ख़ातिमुल अम्बिया ऐयर डीफेन्स मरकज़ इस्लामी इन्केलाब के दुश्मनों के एकदामात का मुक़ाबला करने के लिये पूरी तरह तैयार है। उन्हो ने कहा कि आज ईरान अपने पैरो पर ख़ड़ा होने में कामयाब हो गया है और एन्टी ऐयर कराफ्ट मिज़ाईल और दुश्मन का पता लगाने वाले जदीद रेडार का मालिक है। ब्रीगेडियर जनरल फरज़ाद ईसमाईली ने कहा कि आज इस्लामी इन्क़ेलाब के दुश्मन ईस्लामी जमहूरिया ईरान की ताकत व तवानाई को ख़ुद अपनी आँखों से देख रहे हैं।